

इंदौर में 6 दिसम्बर, 2014 को जैविक हाट के शुभारम्भ के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

'जैविक हाट' के शुभारम्भ के अवसर पर मैं 'प्रयोग परिवार' और 'सतत खाद्य नेटवर्क' को जैविक हाट की संकल्पना के लिए बधाई देती हूँ। मुझे विश्वास है कि आने वाले वर्षों में इस जैविक हाट से अनेक उपभोक्ता और किसान लाभान्वित होंगे।

भारतीय किसान मेहनती हैं। वे सादगी के प्रतीक भी हैं। कल से आज तक 'अन्नदाता' हैं। संस्कृत का एक श्लोक है :

अन्नं न निन्दयत। तव्रतम्॥

अन्नं न परिचक्षीतः। तव्रतम्॥

अन्नं बहु कुर्वीत। तव्रतम्॥

अर्थात्, 'भोजन का अपमान न करें, भोजन की उपेक्षा न करें तो भोजन कई गुना बढ़ जाएगा'। किसान की मेहनत को हम इससे सम्मानित कर सकते हैं।

कृषि हमारी 55 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या की आजीविका का प्रमुख आधार है। जी.डी.पी. का लगभग पांचवां भाग कृषि से आता है। 1960 के दशक में शुरू में प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ. स्वामीनाथन की सोच से उपजी हरित क्रान्ति काफी सफल रही थी। उस समय देश की सबसे बड़ी समस्या अन्न की कमी थी जिससे कुशलता से निपटा जा सका। हमारा बफर स्टॉक तैयार हो गया था।

परंतु रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता से साइड इफेक्ट के रूप में मिट्टी की सेहत, पानी और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। नाना प्रकार की नई-नई बीमारियां इससे पैदा हुईं। जमीन भी धीरे-धीरे बंजर होती गई। ज्यादा लागत लगाने के बावजूद उत्पादन कम होने लगा है।

हरित क्रान्ति इसलिए क्रान्तिकारी हुई क्योंकि खेती करने की प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन हो गया था। कृषि संबंधित कोर्स, रिसर्च भी उसी पद्धति पर आधारित हो गई।

फिर अगला समय आया जेनेटिकली मोडिफाइड सीड का। यह एक नई सोच थी। आर्थिक सुधारों के दौर में परिवर्तित टर्मिनेटर बीज का जबरदस्त प्रचार हुआ। बीज ऐसे हो गए जिनसे एक

ही बार उत्पादन होवे। एक तो उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। गुलाबी पत्तागोभी का उत्पादन हुआ तो सफेद एवं हरे बैंगन आए। उत्पादों में पौष्टिकता एवं कीटनाशकों की मात्रा कम हुई।

परंतु एक समस्या यह हुई कि इन उत्पादों ने कई रोगों को जन्म दिया है। इस तरह से जेनेटिकली मोडिफाइड सीड भी कई प्रकार से उपयुक्त नहीं है। इसमें पेटेंट का मसला आ जाता है। जी.एम. सीड पर किसी कम्पनी विशेष का अधिकार भी हो सकता है।

अतः, कृषि के क्षेत्र में हुए हरित क्रांति एवं जेनेटिकली मोडिफाइड सीड जैसे क्रांतिकारी सुधार आज के परिदृश्य में अप्रभावी हो गए हैं क्योंकि किसान द्वारा उत्पादित उत्पाद भूमि एवं मनुष्य के साथ-साथ पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव छोड़ रहे हैं।

इन सब समस्याओं का हल है जैविक खेती। इससे जमीन, मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण में फैले ज़हर का निपटान हो सकता है। जैविक खेती में उर्वरक के रूप में देशी गोबर का इस्तेमाल होगा तो कीटनाशक के रूप में नीम की पत्तियों का पानी, जिसका कोई भी कुप्रभाव नहीं होता। इस पद्धति में मिट्टी की सेहत को ध्यान में रखते हुए कृषि में पर्यावरणीय संबंधी सरोकारों को महत्व दिया जाता है।

कृषि के क्षेत्र में किए गए पिछले दो सुधार किसानों, वैज्ञानिकों एवं सरकार की तरफ से एकाकार प्रयास थे। इनसे हमें अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई थी। लेकिन, जैविक खेती के प्रोत्साहन का श्रेय आम जनता को जाता है।

जन भागीदारी, ऑर्गेनिक फार्मिंग की सबसे बड़ी विशेषता है। परिवर्तन का यह आंदोलन किसानों को एक खेत से दूसरे खेत से जोड़ रहा है। इससे गांव से गांव भी जुड़ रहे हैं। जुड़-जुड़कर इसका विस्तार धीरे-धीरे हो रहा है। यह एक दूसरे से चलनेवाली साइकिल है। इस पद्धति से जमीन का हम सदा-सर्वदा के लिए सुरक्षित रखते हुए अपनी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। भूमि संसाधन का दोहन करने से भी बचा जा सकता है।

एक बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें अपने एग्रीकल्चर कोर्स को भी इसके लिए बदलना होगा क्योंकि जब कोर्स में बदलाव करेंगे तभी हम अपने बच्चों को इसके बारे में पढ़ा सकेंगे। खेती के परंपरागत स्वरूप को बदलने के लिए आधुनिक आर्गेनिक ढंग से खेती किए जाने का प्रशिक्षण दिए जाने की आवश्यकता है।

आर्गेनिक उत्पादों के बारे में एक और भ्रम है कि यह काफी महंगा है। परंतु यह सत्य नहीं है। चूंकि जैविक उत्पाद कम होते हैं इसलिए वे महंगे होते हैं। उत्पादन प्रचुर मात्रा में हो तो उनकी

कीमत स्वतः ही कम हो जाएगी। किसान खेती में जैविक खाद का उपयोग करके उत्पादन में वृद्धि भी करेंगे। ऑर्गेनिक खेती में पैदावार के बंपर आंकड़े हैं, तो देश में नई राष्ट्रीय कृषि नीति बनेगी जो आर्गेनिक फार्मिंग पर आधारित होगी।

स्वास्थ्य और पर्यावरण संबंधी लाभों के कारण पूरे संसार में ऑर्गेनिक उत्पादों का उत्पादन और उपभोग तेजी से बढ़ रहा है। आंकड़ों के अनुसार ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना, और अमेरिका सहित भारत में जैविक खेती हो रही है। इस तरह यह 7वें स्थान पर है।

सरकार भी देश में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है। मध्यप्रदेश में जैविक खेती की सम्भावना का अनुमान अपने मालवा क्षेत्र में सोयाबीन की जैविक फसल की सफलता से लगाया जा सकता है। सोयाबीन के अलावा, धान, मक्का, मूंगफली, मूंग, कपास जैसी फसलों की खेती भी विभिन्न जैविक पद्धतियों से की जा रही है। सबसे पहली जैविक हाट का आयोजन वर्ष 2003 में भोपाल में किया गया था।

हमारे अधिकांश किसान जैविक खेती के बारे में बहुत कम जानते हैं। इस पद्धति में खेती करने के लिए प्रेरित करने के लिए सभी हितधारकों जैसे सरकार, सहकारी समितियों, किसानों, उपभोक्ताओं और सिविल सोसाइटी आदि को मिलकर काम करना होगा।

भारत में जैविक खेती की सफलता हमारे घरेलू बाजारों के विकास पर निर्भर करती है। ऐसी स्थिति में जैविक हाट जैविक उत्पादों के लिए स्थानीय बाजार का विस्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। ऐसे हाट की स्थापना वास्तव में सराहनीय कदम है।

मैं एक बार फिर जैविक हाट के आयोजकों को धन्यवाद देती हूँ। जैविक हाट खुलने से इस क्षेत्र में जैविक खेती को बढ़ावा मिलेगा। गौरतलब है कि इस हाट का एक उद्देश्य किसानों को उपभोक्ताओं के साथ जोड़ना है। इससे आस-पास के क्षेत्रों के उत्पादक और उपभोक्ता इस जैविक हाट में आएंगे। इस हाट से इन सबकी जरूरतें पूरी होंगी।

इन्हीं शब्दों के साथ इस जैविक हाट का शुभारम्भ करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

धन्यवाद।